ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 31 कुल पृष्ठ-8 22 से 28 मार्च, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 चै.शु.-06

16 से 18 मार्च, 2018 को आयोजित किया गया

आर्य समाज मारतहल्लि वेद मंदिर बंगलौर (कर्नाटक) का भव्य लोकार्पण समारोह

प्रान्तीय कार्यकर्ता सम्मेलन को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया सम्बोधित

कर्नाटक के विभिन्न भागों से लगभग 40 आर्य समाजों के कार्यकर्ताओं एवं लखनऊ, आगरा, दिल्ली, हाथरस आदि स्थानों से आर्यजनों ने कार्यक्रम में भाग लेकर अपनी उपस्थिति से गौरवान्वित किया

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. महावीर अग्रवाल एवं विख्यात संगीतज्ञ श्री कंचन कुमार के भजनो एवं प्रवचनों का श्रोताओं ने लिया आनन्द

कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड एवं गौहत्या के विरुद्ध कर्नाटक में आर्य समाज चलायेगा अभियान

कर्नाटक की राजधानी बंगलौर में आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त नवीन बहुमंजिले भवन आर्य समाज मारतहल्लि वेद मन्दिर एवं वृद्धाश्रम का लोकार्पण समारोह 16, 17 एवं 18 मार्च को नव सम्वत् एवं नववर्ष के अवसर पर आयोजित किया गया। आगरा से सन् 2004 में बंगलौर में आये श्री एस. पी. कुमार (फकीरे दयानन्द) एवं सहयोगियों द्वारा यह आर्य समाज 7 सितम्बर 2008 ब्रिलियंट स्कूल के प्रागंण में प्रारम्भ किया गया था। स्थापना के पांच साल बाद स्कूल के साथ वाली भूमि को खरीद लिया और पुनः पांच साल के बाद एक पांच मंजिला आधुनिक भव्य भवन बन कर तैयार हो गया है जो न जाने कितने लोगों को छाया एवं आश्रय प्रदान करेगा तथा कितने ही लोगों को नया जीवन प्राप्त होगा इस वेद मंदिर एवं वृद्धाश्रम से।

इस समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि श्री राकेश भास्कर, प्रिंसिपल कमिश्नर, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. महावीर प्रसाद अग्रवाल, स्थानीय विधायक श्री अरविंद लिम्बावली, श्री जयराम एस. द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। आर्य समाज के युवा आचार्य श्री राम तीर्थ शास्त्री ने तीन दिन प्रातः सायं हवन का नेतृत्व किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। दिल्ली से पधारे आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कंचन कुमार एवं उनके सहयोगियों ने अपने मधुर भजनों द्वारा उपस्थित आर्यजनों को भावविभोर कर दिया। स्वामी आर्यवेश जी, गुरुकुल कागंडी के पूर्व आचार्य डॉ. महावीर प्रसाद अग्रवाल, आगरा से पधारे पं. उमेश चन्द कुलश्रेष्ठ, श्री यशपाल आर्य जी ने समय समय अपने प्रवचनों के द्वारा उपस्थित आर्यजनों को प्रेरित किया।

17 मार्च को प्रान्तीय कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन मध्यान्ह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में

तथा कर्नाटक सभा के प्रधान श्री सुभाष अष्टिकर की अध्यक्षता में किया गया। इस सम्मेलन में कर्नाटक की लगभग 40 आर्य समाजों के 300 कर्मठ कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। कार्यकर्ताओं को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सम्बोधित किया तथा कर्नाटक में विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाने की प्रेरणा दी। स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी उद्बोधन से कार्यकर्ताओं में उत्साह एवं जोश देखते ही बनता था। श्री सुभाष अष्टिकर ने कर्नाटक में कन्या भ्रूण हत्या, गौहत्या, नशाखोरी एवं धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध अभियान चलाने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से तालियों की गड़गड़ाहट तथा महर्षि दयानन्द की जय के नारों के साथ पारित किया गया। स्वामी आर्यवेश जी ने भवन निर्माण में विशेष योगदान करने वाले फकीरे दयानन्द श्री एस.पी.कुमार, श्री इन्द्र तलवार, एवं सभी सहयोगी आर्यजनों को आशीर्वाद दिया।

18 मार्च को समापन समारोह में स्थानीय विधायक एवं पूर्व मंत्री श्री अरविन्द लिम्बावली, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री जयराम, आयकर आयुक्त श्री राकेश भास्कर आदि ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर आर्य समाज के कार्य में पूर्ण सहयोग देने की घोषणा की। इस आर्य समाज के संस्थापक एवं कर्णधार तथा पूरे आयोजन की धुरी श्री सूर्य प्रकाश कुमार (फकीरे दयानन्द) के अथक प्रयास एवं प्रभाव से इस समारोह में देशभर से आर्यजनों ने भाग लिया। आगरा से लगभग 20 आर्यजनों का एक दल श्री रमाकान्त सारस्वत जी के नेतृत्व में तथा हाथरस से श्री बुद्धसेन आर्य के नेतृत्व में आर्यजनों का दल सम्मेलन में सम्मिलित हुआ। इसी प्रकार दिल्ली से श्री ओम प्रकाश पोद्दार, लखनऊ से श्री प्रेम कुमार आनन्द, एटा से स्वामी लक्ष्मणानन्द एवं ब्रह्मचारी शिव प्रकाश आदि ने भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

समारोह की सम्पूर्ण व्यवस्था में श्री एस.पी. कुमार के साथ श्री इन्द्र तलवार, श्री अभिमन्यु कुमार, श्री दिनेश कुमार आदि का विशेष सहयोग एवं अथक पुरुषार्थ रहा। समारोह में तन–मन–धन से सहयोग करने वाले अनेक गणमान्य महानुभावों को स्मृति चिन्ह एवं ओ३म् पट्ट देकर सम्मानित किया गया। तीन मंजिले इस भव्य आर्य समाज के निर्माण में श्री जयराम जी का सहयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। कर्नाटक सभा के प्रधान श्री सुभाष अष्टिकर के अतिरिक्त सभा के मंत्री श्री वी.एस. पतंगे, श्री राधाकृष्ण वर्मा, श्री बसवराज–हुमनाबाद आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। समारोह के दौरान आगन्तुक महानुभावों के भोजन, आवास तथा आने–जाने की समुचित व्यवस्था आर्य समाज की ओर से की गई थी। सभी लोग अत्यन्त उत्साह के साथ कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। कार्यक्रम बेहद सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

यथार्थ परिप्रेक्ष्य में 'वैदिक संस्कृति'

– रत्नप्रकाश इन्द्रमोहन आर्य तिवारी

वैदिक संस्कृति ही विश्व की प्राचीन तथा महानतम संस्कृति है। इसीलिए इसे हमारे ऋषि, मुनियों ने वेदप्रतिपादित "सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा" को सिद्ध कर दिखलाया हैं। जिन परिष्कृत भावनाओं और संस्कारों के आधार पर समाज में मनुष्य अपने व्यवहार से इस प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत करता है कि जिसमें व्यक्ति का केवल अपना स्वार्थ सिद्ध न होकर प्राणिमात्र का हित हो, इन विचार–परम्पराओं का नाम ही 'संस्कृति' हैं। वैदिक संस्कृति में जीवनयापन का जो उच्च आदर्श रखा है, वह अन्य किसी, संस्कृति या विचारों में नहीं हैं। इस रहस्य को समझने के लिए वेदों तथा उपनिषदों का संस्कार के प्रति जो यथार्थवादी दृष्टिकोण रहा है, उसे समझने तथा जानने की आवश्यकता है।

वैदिक संस्कृति में 'धर्म' की मान्यता अतिमहत्त्वपूर्ण है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य आत्मा तथा परमात्मा को जानना है। धर्म कोई दिखावे या आडम्बर की वस्तु नहीं हैं। धर्म जीवन में प्रत्येक पद पर और प्रत्येक पल आचरण की वस्तु है। धर्म की मोटी परिभाषा अधर्म से बचना है, क्योंकि पाप न करना, पुण्य का प्रथम प्रयत्न अथवा परिणाम है। आज के आधुनिक युग में धर्म मात्र दिखावे की वस्तु बन गई है। क्योंकि एक तरफ हम धार्मिक होने का दिखावा करते हैं, तो दूसरी ओर पापाचरण में लगे रहते हैं। मनुष्य धर्माचरण तो करना चाहता है, किन्तु दूसरी ओर अधर्म को छोड़ना नहीं चाहता, जिसके कारण आज नये–नये मत–पंथों की बाढ़ आ रही है।

संसार में दो तरह की संस्कृतियाँ हैं, पहली भोगवादी जिसे हम 'भौतिकवादी संस्कृति' कहते हैं तथा दूसरी 'अध्यात्मवादी संस्कृति'। भौतिकवादी संस्कृति संसार के सुख–ऐश्वर्यों को भोगना तथा आत्मा–परमात्मा जैसे तत्वों को न मानना है। भौतिकवादी संस्कृति का आधार आधुनिक विज्ञान की मान्यताएँ हैं, जबकि अध्यात्मवादी संस्कृति जिसे हम वैदिक संस्कृति मानते हैं, जिसका वैदिक दृष्टिकोण समन्वयात्मक हैं, न निरा भोगवादी है, न निरा त्यागवादी हैं। ईश्वर ने सृष्टि जीवों के उपभोग के लिए ही बनाई है। सारे संसार का वैभव मनुष्य के उपभोग के लिए ही तो हैं, यजुर्वेद में कहा है, 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः।' – शरीर तथा संसार सत् है, इसलिए इनका भोग करो, परन्तु ये अन्त तक टिकने वाले नहीं हैं। इसलिए संसार को त्याग भाव से भोगो। जैसे हम यात्रा के समय किसी होटल में रूकते हैं। वहाँ की हर वस्तु का हम उपभोग लेते हैं, तथा होटल छोड़ते समय हम अपने अगले लक्ष्य की ओर बढ़ जाते हैं। वहाँ की वस्तुओं से हमें तनिक भी मोह नहीं होता।

भोग तो भोगने के लिए ही हैं, किन्तु उसमें फंसकर हमें अपने लक्ष्य को नहीं भूलना है। उपनिषदों ने लक्ष्य के सम्बन्ध में कहा है 'नाल्पे सुखमस्ति भूमा वै सुखम्।' यह लक्ष्य 'भूमा' अर्थात् अनन्त को पाने का है, जो भोग हमें भोगने चाहिए, वे भोग ही हमें भोग लेते हैं, मगर भोगों के प्रति हमारी तृष्णा समाप्त होने का नाम ही नहीं लेती। ईश्वर ने इन भोगों द्वारा सुखों की मात्र झलक ही हमें दिखलाई हैं। सच्चा सुख तो मात्र ईश्वर प्राप्ति में ही हैं और वही हमारा 'लक्ष्य' होना चाहिए। ऋग्वेद का 'इन्द्र अगस्त्य संवाद' इसी बात की पुष्टि करता है। इन्द्र ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है तथा अगस्त्य जीवात्मा का। गर्भस्थ जीव अष्टममास में अपनी बुद्धि में विचार कर रहा है कि बार–बार जन्म–मरण के चक्कर में पड़कर मैने बहुत यातनाएँ भोगी है। इस बार जन्म लेकर मैं साख्य तथा योग का अभ्यास करूँगा। अर्थात् इसके अभ्यास से जन्म–मरण के चक्कर से छूटने का उपाय करूँगा। मगर दशममास में उत्पन्न होकर बाहर की वायु का स्पर्श पाकर, अपनी उस ईश्वर के सम्मुख की प्रतिज्ञा को भूल जाता है। तब इन्द्र (परमेश्वर) कहता है कि 'जीव का चित्त परिवर्तनशील है। जीव जन्म लेकर सांख्य योग के अभ्यास की अपनी पूर्व प्रतिज्ञा को छोड़ अपने प्राणों के पोषण में लग जाता है।

वैदिक संस्कृति सृष्टिनियमानुकूल त्यागभाव पर ही आधारित है। इसका मूल इसी भाव में निहित है। जिससे संसार में सुख–शान्ति स्थापित हो सकती है। संसार में हर वस्तु को समयानुसार स्वेच्छा से या बलपूर्वक त्यागना ही पड़ता है। यदि स्वेच्छापूर्वक कार्य होगा, तो वह दुःख का कारण नहीं बन पायेगा, और यदि बलपूर्वक होगा तो उससे दुःख उठाना ही पड़ेगा। इसीलिए वैदिक संस्कृति में 'आश्रमव्यवस्था' को महत्त्वपूर्ण माना गया है। आयु के अनुसार आश्रमव्यवस्था हमारे जीवन यापन का उचित ढंग तथा निहितकार्य का निर्देशन करती है। इसी तरह वैदिक वर्णव्यवस्था हमारे सामाजिक जीवन के प्रति हमारे उत्तरदायित्वों का निर्देशन करती हैं। समाज के जो शत्रु हैं, जैसे अज्ञान, अन्याय, अभाव तथा आलस्य। इन्हें अपने–अपने सामर्थ्यानुसार उस–उस वर्ण के कार्य विभाग के द्वारा दूर किया जा सकता है। क्योंकि कार्य विभोजित होने से उस कार्य का उत्तम रूपेण सम्पादन हो पायेगा।

वैदिक संस्कृति में यह कार्य गुरुकुलों में आचार्यों द्वारा हुआ करता है। जो जिस कार्य के योग्य होगा, उसे उसी कार्य को वरण करने का निर्देश आचार्य द्वारा किया जाता है। वैदिक संस्कृति त्याग में निहित स्वेच्छावृत्ति को मानती हैं। अपनी इच्छाविरूद्ध बलपूर्वक कराये गये 'त्याग' को वह नहीं मानती। अपनी किसी वस्तु को बलपूर्वक किसी के द्वारा छीन लिया जाना और अपनी किसी वस्तु को वापस न ले पाने की असमर्थता को त्याग कहना, यह त्याग की मूलभावना को न समझना ही है। वैदिक संस्कृति अन्याय सहने को गलत मानती है। इतिहास गवाह है कि महाराज राम ने रावण के अन्याय के विरूद्ध अपने क्षत्रिय धर्म का परिचय देते हुए रावण को पराजित कर उसका अर्जित राज्य उसके भाई बिभीषण को सौंप दिया। उन्हें उस राज्य का किंचित भी मोह नही हुआ, यही त्यागभाव का वास्तविक अर्थ है।

वैदिक संस्कृति में 'धर्म' की मान्यता अतिमहत्त्वपूर्ण है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य आत्मा तथा परमात्मा को जानना है। धर्म कोई दिखावे या आडम्बर की वस्तु नहीं हैं। धर्म जीवन में प्रत्येक पद पर और प्रत्येक पल आचरण की वस्तु है। धर्म की मोटी परिभाषा अधर्म से बचना है, क्योंकि पाप न करना, पुण्य का प्रथम प्रयत्न अथवा परिणाम है। आज के आधुनिक युग में धर्म मात्र दिखावे की वस्तु बन गई है। क्योंकि एक तरफ हम धार्मिक होने का दिखावा करते हैं, तो दूसरी ओर पापाचरण में लगे रहते हैं। मनुष्य धर्माचरण तो करना चाहता है, किन्तु दूसरी ओर अधर्म को छोड़ना नहीं चाहता, जिसके कारण आज नये–नये मत–पंथों की बाढ़ आ रही है। क्योंकि हमने धर्म के वास्तविक अर्थ को जाना ही नहीं है। हम तो मात्र धर्म की अमान्यता के डर को भुलाने के लिए धार्मिकता का प्रदर्शन कर रहे हैं। आज के आधुनिक युग में धर्म को हमने फैशन समझ लिया है। महाराज मनु द्वारा निर्दिष्ट धर्म के लक्षणों को हमने कभी जानने और आचरण में लाने का प्रयास ही नहीं किया है। आजकल सभी ओर वैदिक सिद्धान्तों की अवमानना हो रही है।

जिस तरह विज्ञान की मान्यताएँ उसके प्रात्यक्षिकों द्वारा मान्य की जाती हैं, उसी तरह पतंजलि मुनि ने वेदों की मान्यताओं को योगदर्शन द्वारा प्रत्यक्ष कर दिखाया है। अष्टांग योग द्वारा ईश्वर सिद्धि का मार्ग बताया है।

आधुनिक विज्ञान की मान्यताएँ समय–समय पर बदलती रहती हैं। उनमें परिवर्तन, परिवर्धन की आवश्यकता होती है, मगर हमारी योग सम्बन्धी मान्यताओं को हमारे ऋषि, मुनि तथा योगिजनों ने सिद्धकर दिखाया है, हमें मात्र उस तपः पूर्ण मार्ग का अनुकरण करने की आवश्यकता है। योग को जन–जन तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य हमारे महापुरुषों ने कर दिखाया है, आगे उसे अपनाकर अपने जीवन को वैदिक संस्कृति के अनुरूप बनाना हमारा कार्य है। योग ने यम–नियमों के पालन को अतिमहत्त्वपूर्ण माना है, जिससे स्वयं में तथा समाज में अनुशासन प्रस्थापित होगा। वैदिक संस्कृति में पतंजलि मुनि के पाँच यमों को मानव समाज के जीवनरूप भवन का आधारस्तम्भ माना है, जिसके पालन से मनुष्य भोगवादी संस्कृति से छूटकर ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। यम हैं – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा परिग्रह, जिन्हें जानना अति आवश्यक है।

1) अहिंसा – अहिंसा का अर्थ है हिंसा से बचना। हिंसा तीन प्रकार की होती है – कायिक, वाचिक और मानसिक। अहिंसा आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाती है जो कि वैदिक संस्कृति का सूचक है। वैदिक संस्कृति का भवन इसी अहिंसा के स्तम्भ पर खड़ा है, जो आज की बढ़ती हिंसा की प्रवृत्ति को रोक सकता है और सबके लिए 'जिओ और जीने दो' का पाठ सिखाता है।

2) सत्य – सत्य तो प्रकाश स्वरूप है, सत्य को पतंजलि मुनि ने 'महाव्रत' कहा है। जो मन में हो, वह वाणी से निकलना चाहिए तथा जो वाणी से कह दे, वह कर्म में आना चाहिए। आज जीवन इससे विपरीत चल रहा है। इसका परिणाम हमारे व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में दिखाई दे रहा है। वैदिक संस्कृति का कहना है 'अनृतात् सत्यं गमय' झूठ से निकलकर सत्य के मार्ग पर चलने की प्रार्थना की गई है।

3) अस्तेय – स्तेय का अर्थ है चोरी व अस्तेय का अर्थ है चोरी न करना। यद्यपि सभी लोग चोरी को बुरा कहते हैं, मगर सूक्ष्मतासे देखा जाये तो सभी लोग किसी ना किसी प्रकार की चोरी करते हुए दिखाई देते हैं। क्योंकि दूसरे की वस्तु छल–कपट से दूसरे के बिना जाने उड़ा लेना या बलपूर्वक छीन लेना चोरी ही है। मगर वैदिक संस्कृति इससे भी आगे जाकर यह मानती है कि चोरी जब पकड़ी जाये, तब चोरी कहलाती है, मगर मन में उसका विचार आना भी चोरी जैसा ही है। अतः 'अस्तेय' के इसी अर्थ को मानना चाहिए।

4) ब्रह्मचर्य – अर्थात् ब्रह्म के समान 'महान बनना।' अपने जीवन को छोटे से बड़ा बनाने का प्रयत्न करना। ब्रह्मचर्य का एक अर्थ यह भी है कि अपनी इन्द्रियों पर संयम रखना और उसमें भी अपनी कामवासना पर विजय पाना।

आज का समाज विषय वासना में डूबा हुआ है, जिसके दुष्परिणाम आज देखने को मिल रहे हैं। हर क्षेत्र में आज सैक्स ही सैक्स दिखलाई पड़ रहा है। आज हम पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर ब्रह्मचर्य के महत्त्व को भूल बैठे हैं। इसके परिणाम स्वरूप बलात्कार जैसी घटनाएँ आज सामान्य होती जा रही हैं। आज राष्ट्रीय दूरदर्शन जैसे प्रसार माध्यमों द्वारा 'कंडोम' का विज्ञापन ज्यादा ही जोर शोर से दिखाया जा रहा है। हमारी सरकार हमें जानवरों से भी गया–बीता समझ रही है, क्योंकि आजतक जानवरों को भी यौन शिक्षा की आवश्यकता नहीं पड़ी, जो कि शिक्षित कहलाने वाले मनुष्यों को आज दी जा रही है। इसके विपरीत संस्कारों को वैदिक संस्कृति के आधार स्तम्भ माने जाने वाले 'ब्रह्मचर्य' की शिक्षा हमारे विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में अनिवार्य करनी चाहिए।

(5) अपरिग्रह – परिग्रह का अर्थ होता है 'संग्रह करना'। अपनी आवश्यकताओं से अधिक वस्तुओं का जुटाना। हमारी संस्कृति त्याग पर आधारित है। संसार का नियम 'अपरिग्रह' का है, छोड़ने का है। अस्तेय के विषय में हमने जाना कि किसी दूसरे की वस्तु का मोह न करना, यह ठीक भी है। बहुत से लोग कहते हैं हम किसी दूसरों की वस्तु का मोह नहीं करते। अपना जो कुछ है, उसी से काम चलाते हैं, मगर वैदिक संस्कृति इससे एक कदम आगे चलकर कहती हैं कि, 'अस्तेय' का पालन करना तो ठीक है, मगर 'अपरिग्रह' का वास्तविक अर्थ अपने अधिकार की वस्तु का स्वेच्छापूर्वक त्याग करना है। आज हम समाज में बहुत लोगों को देखते हैं, जो लोकेषणा में बड़े–बड़े काम चंदा इकट्ठा कर करते हैं। मगर अपनी गाँठ को ढीली नहीं करना चाहते, धन सम्पन्न होते हुए भी न देना 'अपरिग्रह' के वास्तविक अर्थ को न जानना ही है।

ईश्वर ने सृष्टि आरम्भ में ही इसका समाधान वेद द्वारा कर रखा है। जिस प्रकार बाजार में आई नई वस्तु के साथ अल्पबुद्धि, उत्पादक मनुष्य उस वस्तु के व्यवहार का पूर्ण विवरण दे देते हैं, तो ईश्वर बिना ज्ञान के कैसे मनुष्य को सृष्टि में भेज देता?हमें मात्र उस ज्ञान को अपनाने और अध्ययन कर अनुकरण करने की आवश्यकता है। जिज्ञासा मनुष्य से सब कुछ करवा लेती हैं। हमारे सामने पाश्चात्य लोगों का उदाहरण है – वेदों के अध्ययन हेतु उन्होंने भाषा को सीखा और वेदों का अध्ययन कर उसकी वास्तविकता को माना। मगर हाय रे हमारे देश के युवक युवतियाँ! जिन्हें सूर्य उदय देखना भी नसीब नहीं होता, मगर जिस दिन वे सूर्योदय को देख लेंगे, उस दिन से निश्चय ही कुछ अधिक जानने की जिज्ञासा उनमें उत्पन्न होगी, ईश्वर सभी को सदबुद्धि प्रदान करें।

– श्रद्धा निवास, कटघरपुरा, किल्लेधारूर, जिला–बीड़

श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री संन्यास के बाद स्वामी नित्यानन्द बने

संन्यास से पूर्व
श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री

श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2 ने गत् 11 मार्च, 2018 को युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के जन्मोत्सव पर स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में विधिवत संन्यास दीक्षा लेने के बाद स्वामी नित्यानन्द बन गये। श्री शास्त्री जी की संन्यास दीक्षा को आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज के ब्रह्मत्व में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा सम्पन्न किया गया। स्वामी इन्द्रवेश जी के जीवन से प्रेरित एवं महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा को समर्पित श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री जी प्रारम्भ से ही वैराग्य से ओत–प्रोत संघर्षशील व्यक्तित्व रहे हैं। उनका जन्म एक किसान परिवार में 30 दिसम्बर, 1957 को गाँव कतलूपुर, जिला–सोनीपत में हुआ था। उनके पूज्य पिता जी स्व. श्री उमराव सिंह एक प्रतिष्ठित किसान थे। उनकी प्रेरणा से श्री शास्त्री जी ने अपनी शिक्षा गाँव के स्कूल में मैट्रिक करने के पश्चात् वाचस्पति एवं विद्या भास्कर, दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार एवं ज्वालापुर महाविद्यालय हरिद्वार से की। शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त वे आर्य समाज के प्रचार कार्य में जुट गये और उन्होंने कई संस्थाओं एवं संगठनों में दायित्व निभाकर सेवा की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा दयानन्द मठ रोहतक में अवैतनिक महोपदेशक, श्रीमददयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, यमुनानगर में अवैतनिक प्रचारक एवं प्रबन्धक, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद के अवैतनिक प्राचार्य, आर्य विद्यासभा हरियाणा के रजिस्ट्रार, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा एवं क्रांतिकारी आर्य युवा परिषद् के पदेश अध्यक्ष, शराबबन्दी संघर्ष समिति हरियाणा के प्रदेश संयोजक एवं महामंत्री आदि पदों को सुशोभित कर चुके हैं। वर्तमान में आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री पद पर सुशोभित हैं। श्री शास्त्री जी ने युवा निर्माण शिविर, शराबबन्दी आन्दोलन एवं वेद प्रचार में अधिकतम समय लगाकर कार्य किया है। उन्हें 26 जनवरी, 1997 को राज्य सरकार द्वारा शराबबन्दी कार्यकर्ता के रूप में सम्मानित किया गया। आपने गौहत्या एवं कन्या भ्रूण हत्या अभियान में सक्रिय भूमिका निभाई तथा उड़ीसा के सुनामी और गुजरात के भूकम्प के दौरान राहत कार्यों में हाथ बंटाया। राष्ट्रीय किसान महासंघ के प्रवक्ता एवं संयोजक के रूप में भी आपने विशेष कार्य किया। श्री शास्त्री जी वर्तमान में गुरुकुल ब्रह्मानन्द आश्रम सफीदो, जिला–जीन्द में संस्कृत महाविद्यालय का संचालन कर रहे हैं, जो कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। आप सन् 2000 से लगातार एक समय भोजन करते हैं और आपका जीवन अत्यन्त तपस्वी जीवन है। श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री जी ने गत् वर्ष राष्ट्रीय बुद्धिजीवी सम्मेलन हैदराबाद में संन्यास लेने की घोषणा की थी। जिसे उन्होंने पूरा करते हुए हजारों लोगों की उपस्थिति में संन्यास लेकर अत्यन्त प्रसंशनीय कार्य किया है। अब उनका नाम स्वामी नित्यानन्द हो गया है। भविष्य में स्वामी नित्यानन्द जी पूर्व की भांति आर्य समाज के कार्य में निष्ठा के साथ लगे रहेंगे। हम उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

– ब्र. दीक्षेन्द्र, अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा

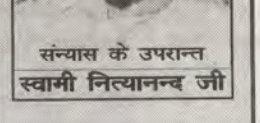

संन्यास के उपरान्त
स्वामी नित्यानन्द जी

रामनवमीं पर विशेष

भारतीय संस्कृति के मेरूदण्ड
मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

– डॉ. रामनाथ त्रिपाठी

कोई पूछे कि भारतीय संस्कृति की परिभाषा क्या है, तो बेहिचक उत्तर दिया जा सकता है कि राम का उदात्त चरित्र ही भारतीय संस्कृति है। एक पूर्ण पुरुष में जितने भी अच्छे गुण हो सकते हैं, राम उन सबके पुंज हैं। उन्होंने अनेकविध कष्ट झेलते हुए भी घर–परिवार, समाज, राष्ट्र और अखिल विश्व के समक्ष त्याग, स्नेह शील और नैतिकता के जो आदर्श प्रस्तुत किये, उससे भारत का जन–जन प्रभावित है। यहाँ की चप्पा–चप्पा भूमि पर रामत्व की छाप है। रामायण घरेलू जीवन का महाकाव्य है। ऐसा ग्रंथ किसी अन्य देश या संस्कृति में उपलब्ध नहीं।

पिता की आज्ञा शिरोधार्य

कैकेयी ने भले ही छलपूर्वक राजा दशरथ से दो वर माँग लिये हों, पर राजा दशरथ ने कभी अपने मुँह से राम को वन जाने के लिए नहीं कहा था। वे मन ही मन चाहते थे कि राम वन न जाएँ। माता कौशल्या उन पर दबाव डाल रही थीं कि माँ का महत्त्व पिता से बढ़कर है। वे माँ के आदेश मानकर वन न जाएँ। गुरु वसिष्ठ, मंत्रिमण्डल के सभी सदस्य, पूरा रनिवास और समस्त प्रजाजन राम के पक्ष में थे। लक्ष्मण फुंफकारते हुए कह रहे थे – रघुनन्दन, इसके पहले कि कोई वनवास की बात जाने, आप राज्य पर अधिकार कर लीजिए। मैं आपकी बगल में धनुष लेकर खड़ा हो जाऊँगा। आप काल के समान युद्ध कीजिए। मैं भरत का पक्ष लेने वालों को वाणों से बींध दूँगा। पिता जी कैकेयी का साथ देंगे तो उन्हें भी दंडित करूँगा।

कैकेयी और मंथरा को छोड़कर कोई भी राम का विरोध नहीं कर रहा था। यदि वे वनवास को स्वीकार न करते तो कोई उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता था। ऐसी अनुकूल परिस्थितियों में भी उन्होंने इतना बड़ा त्याग किया, किसलिए? इसलिए कि श्रद्धेय पिता द्वारा दिए वचन झूठे न हो जाएँ। इस प्रकार उन्होंने राज्य का सुख त्याग कर और 14 वर्षों के कठोर व्रत को स्वीकार कर पितृ भक्ति का अभूतपूर्व आदर्श प्रस्तुत किया। पिता ने भी पुत्र वियोग में प्राण त्याग कर चरम वात्सल्य का परिचय दिया। राम ने परिवार के सभी सदस्यों का ध्यान रखा। यहाँ तक कि इतना बड़ा दण्ड देने वाली सौतेली माता कैकेयी की भी उन्होंने निन्दा नहीं की। पंचवटी में जाड़े की ऋतु में कोहरे से ढंकी गोदावरी में स्नान के लिए जाते हुए लक्ष्मण ने कहा था – ऐसी शीत ऋतु में महात्मा भरत तड़के सवेरे उठकर सरयू में नहाते और ठंडी धरती पर सोते होंगे। ऐसा धर्मात्मा पुत्र पाकर भी कैकेयी इतनी क्रूर कैसे हो गयीं? राम बोले लक्ष्मण, रहने दो, माता कैकेयी की निन्दा न करो। इस समय तुम केवल इक्ष्वाकुनाथ भरत की चर्चा करो।

मर्यादा की स्थापना

विमाता कैकेयी ने राम के प्रति क्रूर होकर घोर अनिष्ट किया था। लेकिन उन्होंने भी राम के चरित्र के विषय में जो शब्द बोले, विचारणीय हैं। जब भरत ननिहाल से लौटकर माता कैकेयी से मिले और उन्हें ज्ञात हुआ कि राम को वनवास दिया गया है तो उन्होंने चकित होकर पूछा क्या राम ने किसी ब्राह्मण का धन हरण किया है? किसी निरपराध व्यक्ति की हत्या की है अथवा क्या उनका मन पराई नारी की ओर चला गया है? उन्हें किसलिए वनवास का दण्ड दिया गया है? कैकेयी ने बताया बेटा, राम ने न तो किसी का धन छीना है और न किसी निरपराध की हत्या की है। वह तो पराई नारी की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता, **न रामः परदारान् स चक्षुभ्यमिपि पश्यति।** मानस में भी कहा गया है – **जेहि सपनेहु परनारि न हेरी।** उड़िया रामायण के अनुसार राम पराई नारी को सहोदर या माता कौसल्या के समान मानते थे। सीता ने भी स्वीकार किया था कि उनमें ही राम का गहन अनुराग है। परिस्थितियों से विवश होकर राम ने सीता को निर्वासित किया था किन्तु उन्होंने अन्य किसी नारी से पाणिग्रहण नहीं किया था। उन्होंने दाम्पत्य जीवन की मर्यादा स्थापित की थी। राम के चरित्र से प्रभावित होकर अन्य रामायणी पात्र भी उनके जैसा आचरण करते थे। लक्ष्मण ने भाभी सीता की चरणों को छोड़कर कभी आँख उठाकर उनके सौंदर्य को नहीं देखा था।

आरम्भ से ही राम जनमत को आदर देने वाले लोकप्रिय शासक रहे थे। जब वे अयोध्या को छोड़कर वन की ओर चले थे तो उनके पीछे ब्राह्मण, ऋषि आदि ही नहीं रजक (धोबी) तन्तुवाय (दर्जी) और अनेक प्रकार के शिल्पी (कारीगर) आदि जन भी अपने–अपने घर छोड़कर चल पड़े थे। राम उन्हें कौशल पूर्वक ही लौटा सके थे। चित्रकूट से दण्डकारण्य की ओर चलते समय अनेक ऋषियों की हड्डियों के ढेर लगे हैं। इन्हें राक्षसों ने मारा है। राम, तुम नगर में रहो या वन में, तुम्हीं हमारे शासक हो। इन राक्षसों से हमारी रक्षा करो। राम ने उन्हें रक्षा का आश्वासन दिया था। मानस में भी राम ने कहा है – **निसिचरहीन करऊँ महि, भुज उठाई प्रन कीन्ह।**

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व का प्रभाव जिन परिवारों में है, वे आज भी परस्पर त्याग और स्नेह के सूत्र में बंधे हुए हैं। रामकथा पर आधारित नाटक, साहित्य, फिल्म आदि के द्वारा समाज को निरन्तर अनुप्रेरित न किया गया तो हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता परिवार प्रेम से हम वंचित रह जायेंगे।

वे धनुष की प्रत्यंचा टंकारते हुए और भारी पगों से धरती को कंपाते हुए दक्षिण की ओर बढ़े थे। मानों वे राक्षसों को चुनौती दे रहे थे। उनके इस कृत्य से ही स्पष्ट है कि सीताहण न भी हुआ होता तो भी उन्होंने राष्ट्रविरोधी राक्षसों से टक्कर ली होती। कुछ लोगों को भ्रम है कि राम ने एकाध बार मर्यादा का उल्लंघन किया है। जैसे, उन्होंने बाली को छिपकर मारा। बाल्मीकि रामायण को ध्यान से पढ़ा जाए तो पता चलता है कि राम ने बाली को छिपकर नहीं मारा था। बाली ने उनकी ओर वृक्ष और बड़ी–बड़ी शिलाएं फेंकी थीं। राम ने अपने वज्र जैसे वाणों से विदीर्णकर उसे मार गिराया था – **क्षिप्तान् वृक्षान् समविध्य विपुलाश्च तथा शिला। बाली वज्र समैर्वाणैर्वज्रेणेव निपाततः।।**

वस्तुतः सुग्रीव और सभी मंत्रियों को विश्वास हो गया था कि बाली मायावी असुर के साथ युद्ध करते हुए मारा गया है। तभी मंत्रियों ने सुग्रीव का अभिषेक कर वानरों की प्रथा के अनुसारा तारा को उसकी पत्नी बना दिया था। इसमें कुछ भी अनुचित नहीं था। लेकिन बाली जब असुर को पछाड़कर आया तो उसने बिना सोचे–समझे निर्दोष सुग्रीव को पीट–पीटकर राज्य से बाहर खदेड़ दिया और अनुज वधु रूमा को बलात् अपनी पत्नी बनाया, सुग्रीव के जीते जी उसने यह अपराध किया था। उसने इससे भी बड़ा एक और अपराध किया था –आतंकवादी राक्षस निरन्तर आर्यावर्त की ओर आते रहते थे। वे उत्पात मचाकर ऋषि संस्कृति को नष्ट कर रहे थे। रावण के साथ बाली की सांठ–गांठ थी। बाली इन आतंकवादी राक्षसों को रोकता नहीं था। राक्षसों की घुसपैठ रोकने और दुराचारी रावण से टक्कर लेने के लिए बाली का विनाश अपरिहार्य था। राम ने उससे युद्ध नहीं किया था, उसे दंडित किया था।

सीता निर्वसन के प्रसंग में किसी रामायण में बताया गया कि राम ने एक धोबी के कहने पर सीता को निर्वासित किया। किसी रामायण में बताया गया कि रावण का चित्र बनाने के कारण राम ने सीता के चरित्र पर संदेह किया। जबकि बाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने कभी भी सीता के चरित्र पर संदेह नहीं किया। गुप्तचर ने उन्हें बताया था कि नगर, वन–उपवन, हाट–घाट और चौराहों पर खड़े होकर लोग चर्चा करते हैं कि राम ने पराये घर में कई मास तक रही सीता स्वीकार कर अच्छा नहीं किया। अब हमें भी अपनी स्त्रियों को सहना पड़ेगा क्योंकि जैसा राजा करता है प्रजा उसी का अनुसरण करती है। यह सुनकर राम को गहरा आघात लगा था। जिस जनता के लिए वे सदा समर्पित रहे वही उनका विरोध कर रही थी। राम सीता को प्राणों से भी अधिक चाहते थे। उन्होंने पतिव्रता सीता के चरित्र पर कभी भी संदेह नहीं किया। उन्होंने कहा था – मेरी अन्तरात्मा कहती है कि यशस्विनी सीता शुद्ध है – **अन्तरात्मा च मे वेत्ति सीतां शुद्धां यशस्विनीम्।** ऐसा था तो राम ने सीता को निर्वासित क्यों किया? उन्होंने ऐसा किया प्रजाजन के मत का सम्मान करने के लिए। उत्तर रामचरित नाटक में राम के चरित्र को सही रूप में समझा गया है।

राम के अभिषेक के समय वसिष्ठ ने कहा था – देखो राम, साधारण जनता ने भी ऐसा अनुभव किया है कि यह अभिषेक मानो उनका ही हो रहा है। तुम्हें भेदभाव से ऊपर उठकर सभी का ध्यान रखना होगा। प्रजारंजन तुम्हारा मुख्य कर्त्तव्य है। श्रेष्ठ राज्य की नींव शासकों के व्यक्तिगत त्याग, मर्यादा और बलिदान पर ही रखी जाती है। राम ने गुरु वसिष्ठ को आश्वस्त करते हुए कहा था – गुरुदेव, प्रजा के अनुरंजन के लिए मुझे अपने सभी सुख, माया–ममता, यहाँ तक कि सर्वाधिक प्रिय जानकी को भी त्यागना पड़े तो मुझे रंचमात्र व्यथा न होगी –

स्नेहं दयांच सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुंचते नास्ति मे व्यथा।।

राम ने एक ओर प्रजारंजक राजा के कर्त्तव्य का पालन किया तो दूसरी ओर उन्होंने पति का दायित्व भी निभाया। उन्होंने सीता को पिता के मित्र बाल्मीकि के आश्रम के निकट इसीलिए रखवाया था ताकि ऋषि सीता और उनकी गर्भस्थ सन्तान को संरक्षण दे सकें। सीता को निर्वासित कर वे स्वयं ही निर्वासित हुए थे। लक्ष्मण सीता को वन में छोड़कर जब अयोध्या लौटे थे तो उन्होंने पाया था कि राम इन चारों दिनों तक कक्ष में बन्द रहे थे। वे न सोये थे और न उन्होंने अन्न ग्रहण किया था। उनका मन लगाने के लिए यज्ञ की व्यवस्था की गई थी। यज्ञ धर्मपत्नी के बिना सम्पन्न नहीं होता। इसलिए उन्होंने किसी अन्य नारी का पाणिग्रहण न कर अपने पार्श्व में सीता की कंचन प्रतिमा स्थापित कराई थी।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के व्यक्तित्व का प्रभाव जिन परिवारों में है, वे आज भी परस्पर त्याग और स्नेह के सूत्र में बंधे हुए हैं। जहाँ यह प्रभाव नहीं रह गया है वहाँ माँ, पिता, पुत्र, भाई, बहन के सम्बन्धों की पवित्रता भी नष्ट हो रही है। रामकथा पर आधारित नाटक, साहित्य, फिल्म आदि के द्वारा समाज को निरन्तर अनुप्रेरित न किया गया तो हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता – 'परिवार प्रेम' से हम वंचित रह जायेंगे। तब भारत भोगवादी पश्चिम भले ही बन जाए, वह त्याग, स्नेह, शील–सम्पन्न नैतिकतावादी देश नहीं रह जायेगा।

आर्य समाज करनाल रोड, कैथल (हरियाणा) के वार्षिक समारोह में

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी उद्‌बोधन से श्रोता हुए गद–गद

आर्य समाज करनाल रोड, कैथल का वार्षिक समारोह 9 से 11 मार्च, 2018 को बड़े उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। समारोह में त्यागी, तपस्वी संन्यासी स्वामी रामवेश जी के आध्यात्मिक प्रवचन एवं श्री जयपाल सिंह व श्री जसविन्दर आर्य के भजनो के कार्यक्रम से श्रोताओं ने भरपूर लाभ उठाया। प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक तथा सायं 3 से 6 बजे तक भजनों एवं प्रवचनों का कार्यक्रम निरन्तर चलता रहा। 11 मार्च को समारोह का समापन बड़ी भव्यता के साथ किया गया। कार्यक्रम में लोगों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर 9 मार्च के सायंकालीन सत्र तथा 10 मार्च के प्रातःकालीन सत्र में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी उद्‌बोधन हुए। स्थानीय आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने स्वामी जी के प्रवचनों को सुनने के लिए लोगों में विशेष कौतुहल उत्पन्न किया हुआ था। इन सत्रों में उपस्थिति भी अत्यन्त प्रभावशाली रही थी। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के सिद्धान्तों की सरल एवं विद्वतापूर्ण व्याख्या करके श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान और उसके पश्चात् भी आर्य समाज ने संघर्ष एवं बलिदान का रास्ता अपनाया था और इतिहास में विशेष स्थान प्राप्त करने में सफलता हासिल की थी। उसी प्रकार वर्तमान समय में आम जनता की समस्याओं के समाधान के लिए तथा विभिन्न सामाजिक बुराईयों को मिटाने के लिए आर्य समाज को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी भूमिका निभानी चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बनाये गये आर्य समाज के 10 नियमों में आर्य समाज का छठवाँ नियम इसके उद्देश्य को दर्शाता है। छठें नियम में कहा गया है कि – 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।' अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। आर्य समाज के मुख्य उद्देश्य के अनुसार वर्तमान समय में यह आवश्यक है कि लोगों की शारीरिक उन्नति के लिए जहाँ रोटी, कपड़ा, मकान, दवाई, पढ़ाई तथा न्याय आदि आवश्यक है, वहीं

संयम, सदाचार एवं व्यायामादि के द्वारा उनके स्वास्थ्य रक्षा की कोशिश करना, आत्मिक उन्नति के लिए, धार्मिक पाखण्ड एवं अन्धविश्वास को मिटाना तथा सामाजिक उन्नति के लिए जात–पात, छुआ–छूत एवं साम्प्रदायिकता आदि संकीर्णताओं को मिटाने के लिए आर्य समाज को युद्ध स्तर पर कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का यह दायित्व है कि बिना किसी भेदभाव एवं पक्षपात के शोषित, पीड़ित एवं वंचित समाज के लिए कार्य करें। उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए संघर्ष करें। यदि आर्य समाज इस कार्यशैली से कार्य करेगा तो इससे जहाँ लोगों का उपकार होगा वहाँ आर्य समाज का वर्चस्व भी बहुत अधिक बढ़ जायेगा। धर्म के नाम पर अन्धविश्वास एवं पाखण्ड में फंसी हुई जनता को वेद के मार्ग पर लाने के लिए यह आवश्यक है कि उनके दुःख दर्द में हम सहयोगी बनें और उन्हें यह एहसास करायें कि आर्य समाज के सिवाय उनका और कोई सहयोगी नहीं है।

स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ की अत्यन्त प्रभावशाली व्याख्या करके श्रोताओं को यज्ञ से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार यज्ञ में दी गई आहुतियों से सुगन्ध उठती है उसी प्रकार जीवन में समर्पण और त्याग से व्यक्ति की यश, कीर्ति चहुँ ओर फैल जाती है। यज्ञ जीवन में त्याग सिखाता हैं अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन यज्ञीय बनाना चाहिए।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वेद में बताया गया है कि परमात्मा की कोई आकृति नही होती। मन्त्र आता है– 'न तस्य प्रतिमा अस्ति।' उसकी कोई प्रतिमा नही है । इसको इस उदाहरण से समझ सकते हैं। जब हम परमात्मा से कुछ मांगते हैं तो आंख बंद करके मांगते हैं, चाहे हम किसी, मंदिर, मस्जिद या चर्च अथवा गुरुद्वारे में क्यो ना हों। जब वहां जाकर भी आंख बंद करने से परमात्मा से मिलना होता है तो फिर ,अपने स्थान पर रह कर भी आंख बंद करके परमात्मा से मिलने का प्रयत्न करना चाहिए। नशा बन्दी परिषद हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश ने कहा कि वेद का मंत्र 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' हमे सब प्राणियों के प्रति मित्र भाव से व्यवहार की प्रेरणा देता है। जयपाल आर्य ने कहा कि एक मंत्र 'सर्वा आशा मम् मित्रं भवन्तु' से सब दिशाओं में मित्र ही मित्र होने की कामना की गई है। प्रीतिपाल आर्य ने कहा कि परमात्मा हमें दुख नही देता, दुख तो हमारे बुरे कर्मो का फल है। काम, क्रोध, मोह, लोभ व अहंकार ही हमे परमात्मा से मिलने से रोकते है। ईश्वर के नाम पर दुनिया मे झगड़े इसलिए हैं क्योंकि वे वेद को भूल गए। जिस दिन वेद अनुसार चल पड़ेंगे। उसी दिन से परमात्मा व धर्म के नाम पर झगड़े बन्द हो जाएंगे।

समारोह में यज्ञ के ब्रह्मा का दायित्व आर्य समाज के धर्माचार्य श्री कृष्ण कुमार शास्त्री ने संभाला तथा व्यवस्था का दायित्व समाज के प्रधान श्री प्रीतिपाल कालड़ा, मंत्री श्री हरिकेश राबीश, श्री रमेश कुमार आदि पदाधिकारियों ने बड़ी कुशलता के साथ निभाया। श्री सत्यवीर आर्य, डॉ. होशियार सिंह आर्य, हरिकेश आर्य, अशोक आर्य, मनीराम आर्य, फूलवती, मास्टर श्यामलाल आर्य एवं मास्टर अमित गुप्ता आदि का भी कार्यक्रम में विशेष सहयोग रहा।

महर्षि दयानन्द योगधाम का लोकार्पण समारोह बहरोड़, जिला–अलवर (राजस्थान) में भव्यता के साथ सम्पन्न

समारोह में मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, विशिष्ट अतिथि उपप्रधान एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य तथा अध्यक्ष के रूप में स्वामी शरणानन्द जी महाराज सम्मिलित हुए

कर्मठ, निष्ठावान् एवं आर्य समाज के समर्पित कार्यकर्ता श्री रामकृष्ण शास्त्री अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् राजस्थान द्वारा अपने संसाधनों एवं प्रयासों से तैयार किये गये विशाल भवन का लोकार्पण महर्षि दयानन्द योगधाम के नाम से सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से 20 मार्च, 2018 को बहरोड़ जिला–अलवर में किया गया।

बहरोड़, जिला–अलवर (राजस्थान) में महर्षि दयानन्द योगधाम का लोकार्पण समारोह 20 मार्च, 2018 को भव्यता के साथ आयोजित किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी लोकार्पण समारोह में पधारे। स्वामी आर्यवेश जी के साथ विशिष्ट अतिथि डॉ. अनिल आर्य अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, स्वामी शरणानन्द जी महाराज–दड़ौली, रेवाड़ी), साध्वी पुष्पा शास्त्री रेवाड़ी, श्रीमती प्रवीण आर्या, श्री बिरजानन्द एडवोकेट महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, श्री धर्मवीर आर्य पत्रकार, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, महेन्द्र भाई महामंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, रामकुमार सिंह दिल्ली आदि ने भी ध्वजारोहण एवं भवन के प्रवेशद्वार पर लगाये गये शिलापट्ट का अनावरण कर इस विशाल भवन का लोकार्पण किया।

विदित हो कि कस्बा बहरोड़, जिला–अलवर, राजस्थान में कर्मठ युवा श्री रामकृष्ण शास्त्री ने लगभग डेढ़ करोड़ की लागत से तीन मंजिले विशाल भवन का निर्माण कराकर उसे यज्ञ, योग एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार का केन्द्र बनाने के लिए महर्षि दयानन्द योगधाम नाम से लोकार्पण करके एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है। लगभग एक हजार स्त्री–पुरुषों की प्रभावशाली उपस्थिति में लोकार्पण समारोह बड़ी भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। प्रातः 8 से 10 बजे तक यज्ञ 10.30 बजे ध्वजारोहण एवं 11 बजे भवन का लोकार्पण किया गया। इस महत्त्वपूर्ण आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी साथियों के साथ पधारे। कार्यक्रम में स्वामी सेवानन्द सैदअलीपुर, स्वामी शुद्धबुद्ध–झज्जर, महात्मा हंसमुनि–नारनौल, विश्वमुनि व ओममुनि–बहरोड़, वैद्य नन्दराम आर्य, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक–बलावा, मा. हरि सिंह आर्य एवं ताराचन्द जालन्धरी गाधौज, श्री रामअवतार पुरुषार्थी–बिहाली, श्रीमती नीलम राठी प्रधान महिला आर्य समाज, ब्र. यशदेव आर्य–रेवाड़ी, श्री सुरेन्द्र सिंह आर्य, महात्मा रामदेव आर्य–जोनायचा, बस्तीराम आर्य, रामानन्द आर्य, महेन्द्र सिंह इंस्पेक्टर, मा. सत्यपाल आर्य, श्री जगमाल सिंह डी.पी.ई., विद्यानन्द आर्य, विनोद कुमार यादव मंत्री आर्य समाज बहरोड़, मा. राजवीर सिंह कोठपुतली, रामनिवास गाँधी–कोसली, वेदप्रिय आर्य, संदीप कुमार आदि की उपस्थिति से कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

लोकार्पण समारोह को सम्बोधित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द योगधाम के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह केन्द्र बहरोड़ के क्षेत्र में आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए सक्रिय रूप से कार्य करेगा। महीने के किसी एक रविवार को धाम में भव्य सत्संग का आयोजन किया जायेगा। हर तीसरे महीने योग का शिविर और हर छठवें महीने सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जायेंगे। इसी प्रकार ग्रीष्मकालीन अवकाश में युवक एवं युवतियों के प्रशिक्षण शिविर भी इस केन्द्र के माध्यम से लगाये जायेंगे। यह केन्द्र यज्ञ, योग एवं जनसेवा का महत्त्वपूर्ण केन्द्र होगा। कार्यक्रम के उपरान्त दाल, बाटी, चूरमा के साथ प्रीति भोज की विशेष व्यवस्था की गई थी। उपस्थित सभी लोगों ने श्री रामकृष्ण शास्त्री को कार्यक्रम के लिए विशेष बधाई देकर उत्साहित किया।

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गौतमबुद्धनगर के तत्वावधान में किया गया त्रिदिवसीय वेद सर्वोपरि प्रचार सम्मेलन का शानदार आयोजन

वेद ही समस्त ज्ञान–विज्ञान का आदि स्रोत है

– स्वामी आर्यवेश

परोपकार से आत्मिक उन्नति होती है

– स्वामी श्रद्धानन्द

गत् 18 से 20 मार्च, 2018 को धनकौर, जिला–गौतमबुद्धनगर में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा की ओर से भव्य वेद सर्वोपरि प्रचार सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त युवा संन्यासी ओजस्वी वक्ता स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य, श्री ओमवीर सिंह आर्य, सुश्री प्रियंका भारती, श्री भजन लाल आर्य–मितरौल एवं श्री मोहन लाल आर्य ढोलक कलाकार आदि के भजन एवं प्रवचनों की तीनों दिन तक धूम मची रही। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि इसमें जिले के विभिन्न गाँव और नगरों से सैकड़ों प्रतिष्ठित महानुभाव एवं आर्यजन तीनों दिन तक सम्मिलित होते रहे। यह कार्यक्रम सार्वजनिक स्थान पर होने के कारण आम जनता के लिए भी आकर्षण का विषय बना रहा और श्रोताओं में सामान्य जनता ने भी बढ़–चढ़कर भाग लिया।

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री वीरेश भाटी के नेतृत्व एवं श्री विजेन्द्र सिंह भाटी के कुशल संयोजन में आयोजित यह सम्मेलन वयोवृद्ध चौ. रघुवर सिंह आर्य के संरक्षण में सफलता के साथ संचालित हुआ। सम्मेलन में सर्वश्री अजय पाल आर्य, ओमवीर सिं एडवोकेट, प्रिं. नरपत सिंह, रामेश्वर सिंह सरपंच, पूर्ण सिंह पहलवान आदि का विशेष सहयोग रहा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी 19 मार्च, 2018 को सम्मेलन में पधारे। उनके साथ स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य एवं धर्मेन्द्र पहलवान भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विशेष उद्बोधन में वेद को सर्वोपरि सिद्ध करते हुए कहा कि सृष्टि के आरम्भ में जब अमैथुनीय सृष्टि उत्पन्न हुई तब परमपिता परमात्मा ने चार ऋषियों की आत्मा में वेद ज्ञान दिया था। उस समय अन्य कोई मत, सम्प्रदाय या धर्म नहीं था। केवल वेद ज्ञान के माध्यम से परमपिता परमात्मा ने मानव मात्र को मनुर्भव का संदेश दिया था। स्वामी आर्यवेश जी ने तर्क के आधार पर बताया कि मनुष्य को नैमित्यिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि उसे ज्ञान का श्रोत उपलब्ध कराया जाये। परमपिता परमात्मा सृष्टि के प्रारम्भ में मानव मात्र के लिए जो ज्ञान देते हैं वही ज्ञान प्रलय आने तक निरन्तर विद्यमान रहता है। इसलिए वर्तमान में प्रचलित मत, सम्प्रदाय एवं ज्ञान–विज्ञान का मूल श्रोत वेद ही है। अर्थात् वेद सर्वोपरि हैं। विभिन्न मत, सम्प्रदायों के पीछे भी यही मान्यता कार्य कर रही है कि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त जिस वेद ज्ञान का अनुसरण दुनिया के लोग करते चले आ रहे थे उसी ज्ञान को आधार बनाकर महाभारत के पश्चात् विभिन्न मत, सम्प्रदाय स्वार्थपूर्ण मान्यताओं को जोड़कर खड़े किये गये। जिनके कारण आपस में वैरभाव और लड़ाई झगड़े फैलने लगे। लोग वेद ज्ञान को भूलकर मनुष्य निर्मित मत सम्प्रदायों में उलझते जा रहे हैं।

इस अवसर पर युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने परोपकार पर अपने ओजस्वी वक्तृत्व में आह्वान किया कि सभी लोगों को अपना जीवन परोपकारी बनाना चाहिए। परोपकार करने से मन को असीम शान्ति मिलती है। उन्होंने कहा कि यदि हम अपने चारो तरफ नजर दौड़ायें तो सारी प्रकृति परोपकार करती हुई दिखाई देती है। सरोवर अपना पानी स्वयं नहीं पीता वह औरों को अपना समस्त जल पान कर देता है। प्यासों की प्यास बुझाता है। पेड़ स्वयं अपने फल नहीं खाते, भूखों की क्षुधा शान्त करने में उन्हें आनन्द आता है। यह सारा संसार हमारा इसीलिए है कि यह चाहे जड़ हो चाहे चेतन हो सब परोपकार में रत है। स्वामी जी ने कहा कि परोपकार और त्याग का सबसे बड़ा उदाहरण यज्ञ है। अतः हम सब अपने जीवन को परोपकार में रत करें और जीवन का आनन्द उठायें।

बहन पूनम आर्या एवं बहन प्रवेश आर्या को 'हरियाणा गौरव अवार्ड' से सम्मानित किया गया

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या व राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या को इंडिया न्यूज की तरफ से 'हरियाणा गौरव अवार्ड' 'शान ए हरियाणा' प्रदान किया गया। यह अवार्ड चंडीगढ़ के ताज होटल में 26 फरवरी की शाम को आयोजित कार्यक्रम में हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर व वरिष्ठ पत्रकार दीपक चौरसिया द्वारा प्रदान किया गया। दोनों बहनों को यह सम्मान सामाजिक क्षेत्र में काम करते हुए कन्या भ्रूण हत्या, अश्लीलता व धार्मिक अंधविश्वास के विरुद्ध जागरूकता फैलाने के लिए दिया गया।

कार्यक्रम में विशेष रूप से हरियाणा के शिक्षा मंत्री प्रोफेसर रामविलास शर्मा, हरियाणा के कृषि मंत्री ओम प्रकाश धनखड़, बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष सुभाष बराला तथा बाल एवं महिला विकास मंत्री कविता जैन सहित कई गणमान्य हस्तियाँ उपस्थित रहे।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान दीक्षेंद्र आर्य ने बताया कि चंडीगढ़ में आयोजित इस कार्यक्रम में बोलते हुए बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि हमारा पूरा जीवन बेटियों के मान, सम्मान और स्वाभिमान को सुरक्षित रखना है, इसलिए मेरा यह सम्मान मैं उन लाखों–करोड़ों अजन्मी बेटियों को समर्पित करती हूँ जो इस दुनिया को देखने से पहले ही विदा हो गई। उन्होंने इंडिया न्यूज को धन्यवाद देते हुए कहा कि मैं खुश हूँ कि आज इंडिया न्यूज ने ब्रेकिंग न्यूज नहीं बल्कि मेकिंग न्यूज का काम किया है। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्य ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि मेरा यह सम्मान मैं आर्य समाज एवं महर्षि दयानंद को समर्पित करती करती हूँ क्योंकि मुझे समाज मे कार्य करने की प्रेरणा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से मिली है। उन्होंने मुख्यमंत्री एवं इंडिया न्यूज का आभार भी प्रकट किया।

– दीक्षेन्द्र आर्य

महर्षिदयानन्दस्य संस्कारविधौ नारीणां स्थितिः

- डॉ. मनुदेवबन्धुः, आचार्य वेदविभाग

प्रस्तावना

आर्यसमाजस्य संस्थापकः महर्षिदयानन्दः वेदोद्धारकः, राष्ट्रभक्तः,आर्यजातिसमुद्धारकः, संस्कृतभाषायाः प्रबलपोषकः, कुरीतिनिवारकः, पाखण्डखण्डकः, वेदभाष्यकारकः नारीणां कल्याणकारकश्चासीत्। यत्र महर्षिदयानन्दः वेदभाष्यं कृतवान्, तत्रैव सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका संस्कारविधि आर्याभिविनय वर्णोच्चारणशिक्षा व्यवहारभानु गोकरुणानिधि पञ्च महायज्ञ विधि आदीनां ग्रन्थाना प्रणेतापि आसीत्। वेदस्य माहात्म्यं व्याकुर्वन्दयान्दो लिखति -

'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।'

अमर ग्रन्थे सत्यार्थप्रकाशे मातृगुणान् व्याख्यापयन् दयानन्दो लिखति - **'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।'** यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञनवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए (मातृमान्) अर्थात् **'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्।'** धन्य वह माता हैकि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।'

गर्भाधानसंस्कारप्रसंगे -

संस्कारविधेः गर्भाधानसंस्कारप्रसंगे नारीणां महिमानं विशिनष्टि दयानन्दः - 'गर्भाधान उसको कहते हैं कि जो - **'गर्भस्याधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणं यस्मिन् येन वा कर्मणा तद् गर्भाधानम्।'** गर्भ का धारण अर्थात् वीर्य का स्थापन, गर्भाशय में स्थिर करना जिस क्रियासे होता है, उसी को गर्भाधान संस्कार कहते हैं। जैसे बीज और क्षेत्र के उत्तम होने से अन्नादि पदार्थ भी उत्तम होते हैं, वैसे उत्तम बलवान् स्त्री-पुरुषों से सन्तान भी उत्तम होते हैं। इससे पूर्ण युवावस्था यथावत् ब्रह्मचर्य का पालन और विद्याभ्यास करके अर्थात् न्यून से न्यून सोलह वर्ष की कन्या और पच्चीस वर्ष का पुरुष अवश्य हो और इससे अधिक वय वाले होने से अधिक उत्तमता होती है।क्योकि बिना सोलहवें वर्ष के गर्भाशय में बालक के शरीर को यथावत् बढ़ने के लिए अवकाश उपयुक्त और स्त्री के शरीर में गर्भ के धारण-पोषण का सामर्थ्य भी नहीं होता और पच्चीस वर्ष के बिना पुरुष का वीर्य भी उत्तम नहीं होता।

पुंसवनसंस्कारप्रसंगे -

महर्षिदयानन्दः पुंसवनसंस्कारप्रसंगे नारीणामारोग्यं स्वास्थ्यं सुसमीचीनं भवेत्, भोजनादिकं बलकारि भवेदिति प्रदर्शयन् लिखित - 'इसके पश्चात् स्त्री सुनियम युक्ताहार विहार करे। विशेषकर गिलोय, ब्राह्मी ओषधि और सूंठ (शुण्ठी) को दूध के साथ थोड़ी-थोड़ी खाया करे और अधिक शयन और अधिक भाषण, अधिक खारा, खट्टा, तीखा, कड़वा, रेचक, हरड़ आदि न खावे, सूक्ष्म आहार करे। क्रोध, द्वेष, लोभादि दोषों में न फंसे, चित्त को सदा प्रसन्न रखे, इत्यादि शुभाचरण करे।'

सीमन्तोन्नयनसंस्कारप्रसंगे -

सीमन्तोन्नयनसंस्कारः पूर्णरूपेण गर्भिणी स्त्रीणां कल्याणाय क्रियते। दयानन्दो लिखति - 'अब तीसरा संस्कार सीमन्तोन्नयन कहते हैं, जिससे गर्भिणी स्त्री का मन सन्तुष्ट, आरोग्य, गर्भस्थिर, उत्कृष्ट होवे और प्रतिदिन बढ़ता जावे।'

विष्णोः श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गवीन्याम्।
पुमांसं पुत्रानाधेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा॥

विष्णोः सर्वव्यापकस्य परमेश्वरस्य श्रेष्ठेन रूपेण सौन्दर्यपूर्णरूपेण अस्यां गवीन्यां गोसदृश्यां नार्यां पुमांसं बलवन्तं रोग रहितं पुत्रम् आधेहि। हे विष्णो! दशमे मासे इमां नारीं मदीयां पत्नीं सर्वगुणसम्पन्नस्य सन्तानस्य जननीं निर्मापय। अग्रे लिखति दयानन्दः - **'किं पश्यसि? प्रजां पश्यामि।'** येन-केन प्रकारेण प्रजा भवेदेव। सीमन्तोन्नयन संस्कारस्य समापन प्रसंगे महर्षिदयानन्दो लिखति -

'तत्पश्चात् एकान्त में वृद्ध कुलीन और सौभाग्यवती, पुत्रवती गर्भिणी अपने कुल की और ब्राह्मणों की स्त्रियाँ बैठें, प्रसन्न वदन और प्रसन्नता की बातें करें और वह गर्भिणी स्त्री उस खिचड़ी को खावे और वे वृद्ध समीप बैठी हुई उत्तम स्त्री लोग आशीर्वाद देवें।

ओ३म् वीरसूस्त्वं भव, जीवसूस्त्वं भव, जीवपत्नी त्वं भव।

हे नारि! त्वं वीरपुत्राणामुत्पादयित्री भव। हे स्त्री! त्वं जीवनशीलानामायुष्मतां सन्तानानां जननी भव। हे पत्नी! त्वं जीवनशीलस्यायुष्मतः पत्युः पत्नी भव। त्वमेव समस्तपरिवारस्य कल्याणकर्त्री असि। त्वमेव सम्पूर्ण परिवारस्य पालयित्री असि। त्वमेव अन्नपूर्णा असि।

जातकर्मसंस्कारप्रसंगे -

जातकर्मसंस्कारः जातस्य जन्मप्राप्तस्य पुत्रस्य पुत्र्याः वा भवति। अमुस्मिन् संस्कार पुत्रस्य कल्याणाय आयुर्विद्या बल बर्धनाय पिता कर्मकाण्डं करोति, भगवन्तञ्च प्रार्थयति।

ओ३म् इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः।
सा त्वं वीरवती भव याऽस्मान्वीरवतोऽकरत्॥

हे स्त्री! त्वं इडा स्तुत्या असि। त्वं मैत्रावरुणी असि। त्वं मैत्री सम्बन्धयोग्या असि। त्वं वरयितव्या असि। त्वं वीरपुत्रं वीराङ्गना पुत्रीं वोत्पादयित्री असि। त्वं स्वयमेवापि वीरवती भव। वीरता युक्तानि साहसिकानि कार्याणि कुरु। त्वं नारी असि। त्वमस्मानपि वीरान् भावय, निर्माय। दयानन्दो लिखति -

'इस मन्त्र में ईश्वर की प्रार्थना करके प्रसूता स्त्री को प्रसन्न करके पश्चात् स्त्री के दोनों स्तन किञ्चित् उष्ण सुगन्धित जल से प्रक्षालन कर पोंछ के..... बालक के मुख में देवें।'

परन्तु अद्यत्वे अत्याधुनिकाः नार्यः स्वदुग्धं न धापयन्ति, न पाययन्ति। परन्तु दयानन्दो लिखति सद्यो जाता माता यत् सद्यो जातं पुत्रं स्वकीयं स्तनस्थं दुग्धं स्तनन्धयमवश्यं पाययतु।

अद्यापि सुपरीक्षितमेतद् यत् माता यदि स्वकीयं पीतवर्णं स्वर्णिमवर्णं दुग्धं पाययति, तदा सन्तानं स्वस्थम्आयुष्मद् बलवद् विद्वांश्च भवति।

Vedic Concept of Creation

The theory of evolution is one of the greatest revelations of modern scientific thought. Various philosophers, physicists and scientific men, working independently of one another and in different domains of Nature, have, established the truth of this theory, so that instead of remaining a theory, there are evident signs of its soon becoming a proven fact. The theory enunciates the great truth, that all complexity came out of simplicity heterogeneity out of homogeneity, perfection out of imperfection, variety out of uniformity. All this beauty and grandeur with apparent paradoxes is the result of the struggle which Nature wages towards the attainment of order and perfection.

In the beginning of the present order of things, in some far-off period, in some distant point of time, the whole universe existed in a state of paramanu (atoms), invisible, subtle and unmanifested. That which we know as the earth, the sun, the moon and the stars was then, in the beginning of the kalpa, but formless matter in its most elemental and attenuated condition- ether, no doubt our ancient Aryan philosophers called it-non-being (asat). We involuntarily exclaim with our glorious Rishis:- "Before, O Child, this was a mere state of non-being (asat), one only, without a second. Thereof verily others say: Before this was non-being, one alone, without a second, from that non-being proceeds the state of being."

There is nothing, therefore, inappropriate in the name which the ancients gave this ether-spirit, viz., the anima mundi-the divine inflatus, the Hiranyagarbha. The Aryan title Hiranyagarbha-the womb of light-is far more expressive and scientific than the name ether.

The Evolution of Heat and Light

In the beginning, there was neither nought nor aught.

Then there was neither sky nor atmosphere above.

What then enshrouded all this universe?

In the receptacle of what was it contained?

Then was there neither death nor immortality,

Then was neither day, nor night, nor light, nor darkness,

Only the Existent One breathed calmly, self-contained. (Rig.10.121.1)

First in the beginning, therefore, was this Hiranyagarbha, one only without a second. The next step towards evolution was the generation of heat. The atoms of ether came closer together and united in different proportions and formed molecules. Thus the various elements were first evolved out of the homogeneous atoms of ether. This union and contraction, gave rise to a great deal of heat.

This intense heat raised the elements to a state of gaseous incandescence, and the whole mass would be now a luminous vapour of all elements, iron, gold etc. This self-luminous vapour has been called by the Aryan Rishis Prajapati (the Lord of all creations) and modern scientists have called such incandescent vapours nebulae (clouds), from their resemblance to white clouds. Thus, there arose light where there was formerly only darkness.

The findings of astrophysicists of today have now reaffirmed the statements of the Vedic declarations, with the help of every sophisticated and ultra-modern scientific equipment. They have gathered information about the circulation of energy and material in space. Astrophysicists are studying how the universe began. Did it all begin with a terrific explosion, the "big-bang"? With the aid of the radio telescopy, the scientists in Effelsberg can pick up signals that were sent 15,000 million years ago- when the "big-bang" is believed to have taken place. From these signals and what is now going on in space, it is possible to look back to the beginning of evolution, as if through a window in time: one can reconstruct the "big-bang".

Dr. Schmid-Burgk describes what is supposed to have taken place: "The cosmic material was originally densely packed and very hot. Because of the high temperatures, the atoms had been broken down into nuclei and electrons; even earlier, the nuclei of the atoms had been reduced to their elements, the protons and neutrons. During the hottest moments, the first few fractions of microseconds of the "big-bang', not even individual protons and neutrons could exist, but only what they are made up of, the quarks." The signals from space, however, also tell how the universe cooled down, expanded, how stars were born and died. With the passage of billions and billions of years, the time lapse has resulted slowly but surely in the loss of heat, the cooling down of planets which were all part of the "Fire ball" once.

The moon was also at one time a part of the earth, and of course being but a smaller body, it has lost almost all its heat. The sun, which was the nucleus of the primitive rotating nebula, still retains a great deal of its heat, but it is not so intense as it must have been in the beginning. However, a time will come when the sun will cool down to darkness and no more be a fountain of light and heat to its planets when there will be perfect darkness and intense cold-in fact, when this present cycle will come to an end. Long, long before that time arrives, this old earth will become a desolate wilderness- lifeless, silent and obscure. Seas, rivers, lakes, and oceans will be congealed to ice, even the very air will be a mass of solid. That time, according to Aryan calculation, is 2,333,227,018 years distant.

Modern scientific findings have reaffirmed the statement of this Vedic declaration.

- ***Satyakam Vidyalank***

आर्य जगत् के महान् वीतराग संन्यासी पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा) के जन्मदिवस के अवसर पर दयानन्द मठ चम्बा में 5 व 6 मई, 2018 को होगा

विशाल आर्य महासम्मेलन

आप सभी की उपस्थिति प्रार्थनीय है, भारी संख्या में पहुँचकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

– आचार्य महावीर सिंह, अध्यक्ष, दयानन्द मठ, चम्बा (हिमाचल प्रदेश)

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी को किया गया 'कर्मवीर आर्यश्रेष्ठ' की उपाधि से सम्मानित

अलवर : स्वतंत्रता सेनानी स्व. छोटू सिंह आर्य एवं श्रीमती शारदा देवी की पुण्य तिथि के अवसर पर शारदा देवी छोटू सिंह आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट, अलवर की ओर से अष्टम सम्मान समारोह में सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी, जयपुर को 'कर्मवीर आर्यश्रेष्ठ' की उपाधि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्रीमती कमला शर्मा ने अभिनन्दन पत्र वाचन किया और स्मृति चिन्ह एवं शॉल ओढ़ाकर 11 हजार रुपये भेंटस्वरूप प्रदान किये। आर्य कन्या विद्यालय समिति की ओर से संचालित संस्थाओं में से चयनित सर्वश्रेष्ठ अध्यापिका अंजू माथुर को शॉल ओढ़ाकर 3100/– रुपये प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त जरूरतमंद प्रतिभाशाली छात्राओं को पं. विद्यावाचस्पति मेमोरियल ट्रस्ट दिल्ली की ओर से पुरस्कृत किया गया। शुक्रवार को आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में दोपहर 3 बजे यज्ञ प्रारम्भ हुआ। उसके बाद श्रद्धांजलि सभा प्रारम्भ हुई जिसकी अध्यक्षता श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति ने की।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री सामवेदी जी ने आर्य कन्या संस्था की ओर से अलवर को यज्ञमय बना देने की बात कही और आर्य समाज के साथ जुड़े अपने संस्मरणों को श्रोताओं के साथ साझा किया। उन्होंने कहा कि यदि देश स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों, विचारों पर चलता तो आज इतनी समस्याएँ न होतीं। इस अवसर पर श्री अमर मुनि ने सम्मान की परम्परा के बारे में कहा कि युवाओं में ऊर्जा भरने का कार्य करते हैं ये सम्मान समारोह। श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने कहा कि श्री सत्यव्रत सामवेदी जी का व्यक्तित्व अपने आपमें बहुत ही संघर्षशील रहा है और वे आर्य समाज व दयानन्द के सच्चे अनुयायी हैं। श्री प्रदीप कुमार आर्य ने सभी का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

गुरुत्वाकर्षण के सर्वप्रथम अन्वेषक न्यूटन नहीं?

॥ इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात् ॥

गुरुत्वाकर्षण बल के बारे में हम सभी जानते होंगे कि इस शक्ति के कारण ही पृथिवी सभी पदार्थों को अपनी ओर आकर्षित करती है और कहा जाता है कि यूरोपवासी **ऐसेकन्यूटन** ने सर्वप्रथम इसको जाना, तब से यह विद्या पृथ्वी पर फैली है तथा कुछ लोग यह भी मानते हैं कि न्यूटन से भी हजारों वर्षों पूर्व गुरुत्वाकर्षण की खोज **भास्कराचार्य जी** ने की थी। ये दोनों ही बातें यथार्थ नहीं हैं। इसका प्रमाण यह है कि भास्कराचार्य जी द्वारा प्रणीत **'सिद्धान्तशिरोमणि'** नामक ग्रन्थ में भास्कराचार्य जी ने स्वयं एक प्राचीन भारतीय आचार्य का श्लोक उद्धृत किया है जो गुरुत्वाकर्षण बल को भलीभांति बतला रहा है। जो इस प्रकार है कि–

आकृष्टशक्तिश्च मही तया यत् खस्थं गुरु स्वाभिमुखीकरोति।
आकृष्यते तत्पततीव भाति समे समन्तात् कुरियं प्रतीतिः॥

अर्थात् सर्वपदार्थगत एक आकर्षण शक्ति विद्यमान है, जिस शक्ति से यह पृथिवी आकाशस्थ पदार्थ को अपनी ओर करती है और जो यह खींच रही है वह गिरता मालूम होता है अर्थात् पृथिवी अपनी ओर खींच कर आकाश में फेंकी हुई वस्तु को ले आती है, इसको लोक में गिरना कहते हैं। इससे विस्पष्ट है कि भास्कराचार्य से बहुत पूर्व यह विद्या देश में विद्यमान थी।– **वैदिक-विज्ञान पृ. २१**(लेखक–पं. शिवशंकर शर्मा 'काव्यतीर्थ')

प्रसारक : गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ (उ.प्र.) २५०५०१

आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर

'वैदिक सांस्कृतिक विरासत सम्भाल' कार्यक्रम के अन्तर्गत

भव्य आर्य गौरव दिवस का आयोजन

वैदिक सांस्कृतिक विरासत संभाल कार्यक्रम के अन्तर्गत 8 अप्रैल, 2018 रविवार को सायंकाल 2.30 से 6 बजे तक एस.एल. भवन्स स्कूल सामने शिवाला भाइयाँ, अमृतसर में आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य गौरव दिवस का भव्य आयोजन किया जा रहा है। महर्षि दयानन्द धाम बाजार हंसली, अमृतसर द्वारा आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, कुंवर विजय प्रताप सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता श्री वीरेन्द्र सहदेव, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री अश्विनी शर्मा एडवोकेट, श्री अरविन्द मेहता उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, डॉ. दीनानाथ शर्मा मुख्य अधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, करप्शन मोर्चा के अध्यक्ष महन्त रमेशानन्द, पं. चन्द्रशेखर शर्मा, श्रीमती स्वराज ग्रोवर सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश आर्य करेंगे। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

ओ३म्
प्रवेश सूचना
ओ३म्
प्रवेश सूचना
ओ३म्
भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय ट्रस्ट
ग्राम व पोस्ट जसात-123502, तहसील पटौदी, जिला गुरुग्राम (हरि.)
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बंधित
विशेषताएं :
प्रवेश प्रारम्भ कक्षा छठी से
* प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा का अनुपम सामंजस्य केन्द्र।
* निःशुल्क शिक्षा।
* अनुभवी एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
* समय-समय पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन।
* संध्या-हवन, योगासन, प्राणायाम, खेल समन्वित नियमित दिनचर्या और धर्म शिक्षा द्वारा संस्कारित वातावरण।
* धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध, यज्ञ वैदिक विधि द्वारा।
* खुला एवं प्रदूषण रहित गुरुकुल प्रांगण।
* Computer शिक्षा की उचित व्यवस्था।
* समय-समय पर नई शिक्षा पद्धति का प्रयोग व मूल्यांकन।
* महर्षि दयानन्द आर्ष पाठ विधि द्वारा निर्दिष्ट शिक्षा।
सम्पर्क सूत्र : 9416188854, 9992068104
e-mail:chauhanravinder79@gmail.com

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (ε)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
विश्व इतिहास में पहली बार

हरिद्वार चलो

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का हरिद्वार में होगा भव्य आयोजन

सभी गुरुकुल एवं आर्यजन अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दें।

निवेदक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष :– 011–23274771, 23260985
ई–मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

नव–सम्वत्सर के उपलक्ष्य में महिलाओं ने किया सामूहिक यज्ञ

दिनांक 18 मार्च, 2018 रविवार को नववर्ष और आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभअवसर पर आर्य समाज छपरौली के कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र आर्य (पप्पू पहलवान) के आवास पर छपरौली नगर में पहली बार एक ऐसी परम्परा शुरू की गई जो शायद छपरौली कस्बे में पहले कभी नहीं हुई। पट्टी चौधरान की महिलाओं ने सामूहिक यज्ञ करके वैदिक नववर्ष एवं आर्य समाज स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के पूर्व प्रधान श्री महक सिंह आर्य जी रहे। आर्य समाज छपरौली के कार्यवाहक प्रधान श्री धर्मेन्द्र आर्य ने यज्ञ के कार्यक्रम में विशेष सहयोग प्रदान किया।

इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा श्री महक सिंह आर्य ने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यज्ञ एक सर्वश्रेष्ठ कर्म है और इसे करने से परिवार तथा बच्चों में विशेष संस्कारों का आधान होता है। अतः प्रत्येक शुभ कार्य में अपने घर पर यज्ञ अवश्य करना चाहिए। इस विशेष यज्ञ की यजमान श्रीमती मोनिका खोखर पत्नी श्री नरेन्द्र आर्य ने सभी अतिथि महिलाओं का आदर सत्कार किया तथा उनसे हर वर्ष यज्ञ में शामिल होने का अनुरोध किया। इस अवसर पर समाजसेवी श्री सुरेन्द्र चौहान ने श्रीमती मोनिका खोखर को एक पौधा भी भेंट किया और यज्ञ में आई हुई सभी महिलाओं को पेड़ लगाने का संकल्प भी दिलवाया। जलपान के साथ यह कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व आर्य समाज छपरौली में वैदिक नववर्ष और आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में देवयज्ञ तथा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यज्ञ प्रक्रिया कार्यकारी प्रधान श्री धर्मेन्द्र आर्य ने पूर्ण की। आ… समाज छपरौली के प्रधान आदरणीय श्री कृष्णप… खलीफा जी की अध्यक्षता में हर्षोल्लास के साथ कार्य… सम्पन्न हुआ। आर्य समाज के सभी पदाधिकारी एवं सद… मुख्य रूप से उपस्थित थे।

– धर्मेन्द्र आर्य

नवरात्रों पर विशेष चिन्तनीय

चारों तरफ जय माता दी
जय माता दी छाई हुई है
फिर ये वृद्धाश्रमों में
किसकी माँ आई हुई हैं।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.…
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं…